Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 10 कुरुक्षेत्र (तृतीय सर्ग से संकलित अंश) रामधारी सिंह दिनकर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. कुरुक्षेत्र' काव्य के अनुसार शान्ति का प्रथम न्यास है?

(क) अन्याय
(ख) न्याय
(ग) द्वेष
(घ) ईष्र्या
उत्तर: (ख) न्याय

प्रश्न 2. कवि ने नर-व्याघ्र किसे कहा है ?

(क) कर्ण को
(ख) भीम को
(ग) दुर्योधन (सुयोधन) को
(घ) अर्जुन को
उत्तर: (ग) दुर्योधन (सुयोधन) को

प्रश्न 3. राम तीन दिन तक सागर से क्या माँगते रहे?

(क) अनाज
(ख) रास्ता
(ग) कपड़े
(घ) हथियार
उत्तर: (ख) रास्ता

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लोग किस भुजंग से डरते हैं?

उत्तर: लोग विषधर भुजंग से डरते हैं।

प्रश्न 2. विनय की दीप्ति किसमें बसती है ?

उत्तर: विनय की दीप्ति शर अर्थात् शक्ति में बसती है।

प्रश्न 3. सहिष्णुता किसके लिए अभिशाप है ?

उत्तर: सहिष्णुता कायर तथा अन्याय का विरोध न करने वाले के लिए ही अभिशाप होती है।

प्रश्न 4. आज की कृत्रिम शान्ति किसकी रखवाली करती है?

उत्तर: आज की कृत्रिम शान्ति अन्याय , स्वार्थपरता, शोषण और लोभ लालच की रखवाली करती है।

प्रश्न 5. वास्तव में युद्ध करने के लिए दोषी कौन है?

उत्तर: युद्ध करने के लिए दोषी वास्तव में वह होता है जो न्यायोचित अधिकार मांगने पर भी ना दे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कृत्रिम शांति किससे डरती है और क्यों ?

उत्तर: कृत्रिम शान्ति अपने आप से ही डरती है। कृत्रिम शांति बल प्रयोग द्वारा स्थापित होती है। अतः उसको सदा अपनी रक्षा की शंका बनी रहती है। वह भयभीत रहता है कि कोई उसके विरुद्ध हथियार उठा सकता है और शोषण का विरोध कर सकता है , कृत्रिम शान्ति मनुष्य के मन के प्रभावित होने के कारण नहीं होती, वह बलात् स्थापित होती है।

प्रश्न 2. न्यायोचित अधिकार यदि माँगने से न मिले तो वीर लोग क्या करते हैं ?

उत्तर: यदि न्यायोचित अधिकार माँगने से नहीं मिलता तो वीर पुरुष अपने बाहुबल का प्रयोग करके प्राप्त करते हैं। वे आतातायियों तथा शोषकों के विरुद्ध तलवार उठाते हैं, बनावटी शान्ति व्यवस्था को भंग करके वे विद्रोह का बिगुल बजा देते हैं। वे युद्ध

में जीतकर अथवा आत्म-बलिदान देकर अपना अधिकार प्राप्त कर लेते हैं।

प्रश्न 3. अत्याचार सहन करने का कुफल क्या होता है?

उत्तर: अत्याचार सहन करने का कुफल यह होता है कि जो मनुष्य शान्त रहकर चुपचाप अत्याचार सहन करता है, वह कायर समझा जाता है। कोई भी उसके पराक्रम से भयभीत नहीं होता। उसकी न्यायोचित बात को भी कोई सुनने वाला नहीं होता है। इसके दुष्परिणामस्वरूप उसको सदा अत्याचार सहन करते रहना पड़ता है।

प्रश्न 4. क्षमा किस पुरुष को शोभती है ?

उत्तर: क्षमा वीर तथा पराक्रमी पुरुष को ही शोभा देती है। जो निर्बल है जिसमें अत्याचारी का विरोध करने का सामर्थ्य नहीं है, उसको किसी को क्षमा करने का अधिकार नहीं होता। यह माना जाता है कि अत्याचारी को दण्ड देने की सामर्थ्य न होने के कारण वह क्षमा करने की बात कहकर अपनी दुर्बलता छिपा रहा है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बिना शक्ति के क्षमाशील होने के क्या परिणाम होते हैं? पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

उत्तर: 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो'– कहकर कवि दिनकर ने बताया है कि दुर्बल मनुष्य को क्षमा करने का अधिकार नहीं होता। जो मनुष्य दुर्बल होता है, वह क्षमाशील नहीं हो सकता। क्षमा उसका गुण नहीं, मजबूरी है। दुर्बल मनुष्य किसी बलवान अत्याचारी से कहे कि मैं उसे क्षमा करता हूँ तो उसका यह आचरण अपनी दुर्बलता को छिपाने का एक बहाना माना जायेगा। जब वह किसी के अपराध अथवा अनुचित व्यवहार के लिए उसको दण्ड देने की क्षमता नहीं रखता, तो उसकी क्षमा निरर्थक ही मानी जायेगी। राम लंका जाने के लिए समुद्र तट पर ससैन्य उपस्थित थे। वह तीन दिन तक समुद्र से मार्ग देने के लिये प्रार्थना करते रहे किन्तु समुद्र अनसुनी करता रहा। राम को इस पर क्रोध आया और उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ाया। भयभीत समुद्र साकार उपस्थित हुआ और राम के चरणों में आ गिरा और उनसे अपनी रक्षा की गुहार लगाई। राम ने उसको क्षमा कर दिया। राम शक्तिशाली थे , अत: वह ऐसा कर सके। इसके विपरीत पाण्डव कौरवों की प्रत्येक उद्दण्डता को क्षमा करते रहे किन्तु दुर्योधन उनको कायर ही समझता रहा।

क्षमा, दया, सहनशीलता आदि गुण शक्तिशाली मनुष्य को ही सुशोभित करते हैं। जो शक्तिहीन है , उसके लिए तो ये गुण उसकी असमर्थता के ही द्योतक होते हैं। शक्ति और सामर्थ्य के अभाव में क्षमा निष्फल होती है। बिना शक्ति के क्षमाशील होने वाले व्यक्ति हँसी का पात्र बनता है और लोग उसकी निन्दा करते हैं।

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर शांति और युद्ध पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: युद्ध निन्दनीय होता है। वह किसी समस्या का समाधान नहीं होता। युद्ध के बीज किसी-न-किसी शान्ति स्थापना के लिए हुए समझौते अथवा संधि में निहित होते हैं। महाभारत युद्ध के पीछे भी बारह वर्ष वनवास के पश्चात् पाण्डवों का राज्य लौटा देने का कौरवों के साथ हुआ समझौता ही था। अन्याय और अनीति को सहन करने की परिणति भी अन्त में युद्ध में होती है। युद्ध किसी के अधिकार और सम्पत्ति को बल प्रयोग द्वारा हड़पने के लिए भी होता है तथा किसी अन्यायी के अनुचित व्यवहार तथा शोषण का विरोध करने के लिए भी होता है। इस प्रकार युद्ध में दो पक्ष होते हैं। एक न्याय का दूसरा अन्याय का। दोनों स्वयं को सही मानते। हैं तथा एक-दूसरे को शत्रु मानते हैं। युद्ध में एक आक्रमणकारी होता है तथा दूसरा आत्मरक्षार्थ युद्ध भूमि में उतरता है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

शान्ति समाज तथा देश की उन्नति और विकास के लिए आवश्यक है। अशान्ति की स्थिति में उन्नति तथा प्रगति नहीं हो सकती। शान्ति दो प्रकार की होती है। एक प्रकार की शान्ति वह है जो अस्त्र-शस्त्रों तथा शक्ति के भय से स्थापित की जाती है। लोगों को आतंकित करके दमन, शोषण तथा अनुचित बातों को सहन करने को बाध्य किया जाता है। इस प्रकार की शान्ति कृत्रिम शान्ति होती है। इसी के भीतर युद्ध के बीज छिपे रहते हैं। दूसरी ओर सच्ची शान्ति वह होती है जो हृदय से स्वीकार की जाती है। इस शान्ति की स्थापना के लिए बल प्रयोग की जरूरत नहीं होती। बनावटी शान्ति की अपेक्षा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध करना अधिक अच्छा होता है।

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 10 - कुरुक्षेत्र (तृतीय सर्ग से संकलित अंश) - रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय

हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर , 1908 ई. में सिमरिया, मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। इनके पिता रवि सिंह एवं माता मनरूप देवी थी। दिनकर जब दो वर्ष के ही थे कि इनके पिता का स्वर्गवास हो गया । फलतः दिनकर और इनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी माता द्वारा किया गया इनका बचपन एवं कैशोर्य देहात में बीता जिससे वास्तविक जीवन की कठोरता से सामना हुआ आपने प्राथमिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की। मिडिल तक की शिक्षा 'राष्ट्रीय मिडिल स्कूल' में प्राप्त की यह स्कूल उस समय सरकारी व्यवस्था (विदेशी-सरकार) के विरोध में खोला गया था शायद यहीं से दिनकर के मन और मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का विकास प्रारम्भ हुआ। हाई स्कूल शिक्षा 'मोकामाघाट हाई स्कूल' से पूरी की । इस समय तक इनका विवाह भी हो चुका था और ये एक पुत्र के पिता भी बन गए थे 1928 में मैट्रिक के बाद पटना विश्वविद्यालय से 1932 में इतिहास विषय के साथ बी.ए. ऑनर्स किया। तत्पश्चात् कुछ समय प्रधानाध्यापक रहने के बाद बिहार सरकार में 'सब-रजिस्ट्रार' के पद पर रहे। इस पद पर लगभग 9 वर्ष तक रहे एवं बिहार की पीड़ित अवस्था को समझा। आप विश्वविद्यालय के व्याख्याता रहे तो कुलपति भी रहे। 1952 से बारह वर्ष तक आप राज्य सभा के सदस्य रहे । सन् 1965 से 1971 तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे।

रचना-संसार

दिनकर के कवि जीवन का वास्तविक प्रारम्भ सन् 1935 में हुआ जब रेणुका ' प्रकाशित हुई। इनकी आरम्भिक रचनाएँ आत्ममंथन की रचनाएँ कहलाती हैं कवि इनमें स्वयं को पहचान कर नया मार्ग बनाने की कोशिश करता है। दिनकरजी की पद्य रचनाओं में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'नील कुसुम', कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, 'उर्वशी', 'द्वन्द्वगीत', 'इतिहास के आँसू, 'सीपी और शंख, नीम के पत्ते', 'नये सुभाषित, 'आत्मा की आँखें, 'बापू, 'दिल्ली', 'प्रणभंग', 'धूप और धुंआ, 'चक्रवात' और 'परशुराम की प्रतीक्षा आदि प्रसिद्ध रही हैं। 'द्वन्द्वगीत' रुबाइयों का संग्रह है।

पद्य के अतिरिक्त दिनकर ने गद्य में भी उच्च स्तरीय साहित्य की रचना की है उनमें 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण', 'हमारी सांस्कृतिक कहानी एवं 'शुद्ध कविता की खोज' आदि प्रमुख हैं बाल साहित्य-संग्रह - 1. मिर्च का मजा, 2. सूरज का ब्याह।

दिनकर के काव्य में एक सामाजिक चेतना हमेशा विद्यमान रही है राष्ट्रीय भावना जिसका मूल तत्व है। राजनीतिक विषय इनकी कविताओं में ज्वलंत रूप से रहे हैं। दिनकर ने पद्य के अतिरिक्त अन्य विधाओं में भी लिखा है। दिनकर की रचनाओं में इनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखती है। इनकी कविताएँ मूलतः ओज और तेज की कविताएँ हैं, जिनमें सुप्त और कायर व्यक्ति को जगाने की क्षमता है जो मन में जोश भर देती हैं। अन्यायी एवं अत्याचारी का खुला विरोध मिलता है। असमानता, भेदभाव एवं शोषण के खिलाफ रणभेरी बजती रहती है। इन सबके उपरांत भी इनके काव्य में सांस्कृतिक चिन्तन-मनन की प्रक्रिया जारी रहती है। दिनकर अन्यायियों के दुश्मन; तो दब-कुचले के परम हितैषी दिखाई देते हैं । इन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' एवं पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया है।

पाठ परिचय

इस पाठ में दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य का 'तृतीय सर्ग का संकलित अंश लिया गया है । कुरुक्षेत्र' में कवि 'महाभारत' महाकाव्य के पौराणिक पात्रों के माध्यम से युद्ध एवं शान्ति के सम्बन्ध में प्रश्न उठाता है। यहाँ प्रस्तुत 'तृतीय सर्ग' के संकलित अंश में भीष्म व युधिष्ठिर के मध्य संवाद चल रहा है। युधिष्ठिर स्वयं को दोषी मानकर युद्ध से विमुख हो रहे हैं। भीष्म उनसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह बता रहे हैं कि छल , कपट एवं धोखे से बनाई गई शान्ति , शान्ति नहीं होती है बल्कि यह तो युद्ध की दबी हुई चिनगारी है। साथ ही यह भी कहते हैं कि युद्ध का असली दोषी कौन होता है ? वह जो कि अन्याय के विरुद्ध न्याय हेतु हथियार उठाता है या फिर वह जो अन्याय और ताकत से कृत्रिम शान्ति थोपने का प्रयास करता है। भीष्म तरह-तरह के तर्को से युधिष्ठिर को समझाते हैं। यही कविता का संदेश है कि यदि हम सही हैं तो अन्याय का विरोध युद्ध तक जाकर कर सकते हैं यद्यपि युद्ध निंद्य है परन्तु अन्यायपूर्ण शान्ति से वह ठीक है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

1. समर निंद्य है धर्मराज, पर कहो, शांति वह क्या है,
जो अनीति पर स्थित होकर भी बनी हुई सरला है ?
सुख-समृद्ध का विपुल कोष। संचित कर कल, बल, छल से,
किसी क्षुधित का ग्रास छीन। धन लूट किसी निर्बल से।
सब समेट, प्रहरी बिठलाकर कहती कुछ मत बोलो,
शन्ति-सुधा बह रही, न इसमें गरल क्रान्ति का घोलो।
हिलो-डुलो मत, हृदय-रक्त अपना मुझको पीने दो,
अचल रहे साम्राज्य शान्ति का जियो और जीने दो।

शब्दार्थ– निंद्य = निन्दनीय। धर्मराज = युधिष्ठिर। विपुल = विशाल। कल = यंत्र। क्षुधित = भूखा। ग्रास = गस्सा। प्रहरी = पहरेदार। गरल = विष। अचल = स्थिर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उधृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। महाभारत युद्ध के समय धर्मराज युधिष्ठिर रक्तपात देखकर बहुत दु:खी थे। वह युद्ध के विरोधी तथा शान्ति के पक्षपाती थे। पितामह भीष्म से युद्ध और शान्ति

के सम्बन्ध में उनका तर्क-वितर्क चल रहा था। कवि वर्तमान के सन्दर्भ में युधिष्ठिर तथा भीष्म के माध्यम से इस विषय को उठाया है।

व्याख्या– शान्ति के पक्षपाती धर्मराज युधिष्ठिर से भीष्म पितामह ने पूछा कि यदि तुम युद्ध को निन्दनीय मानते हो तो बताओ कि अन्याय और अनीति के पक्ष में होने वाली शांति , जो सीधेपन का दिखावा करती है, प्रशंसनीय कैसे हो सकती है? किसी निर्बल मनुष्य का धन लूटकर किसी भूखे के मुँह से रोटी का ग्रास छीनकर यंत्रों की सहायता से धोखे से तथा ताकत से धन-सम्पत्ति और सुख के अपार साधनों का संग्रह करके , सब धन-सम्पत्ति पर अधिकार करके उसकी सुरक्षा के लिए पहरेदार लगाकर लोगों को अन्याय का विरोध करने से रोककर उनसे यह कहना कि चारों ओर अमृत के समान लाभप्रद शांति की बहाली है , इसको रोको मत। इस शान्त वातावरण में क्रान्ति का विष घोलकर इसको नष्ट मत करो। ऐसी शान्ति सच्ची शांति नहीं है , वह न्याय-पथ पर चलने वालों का खून पीती है। वह उनसे कहती है , तुम चुप रहो, उठकर विरोध मत करो, शान्ति के राज्य को स्थिर रहने दो। तुम भी जीवित रहो तथा मुझे भी जीने दो।

विशेष –

1. अन्याय पर स्थित बलपूर्वक स्थापित शान्ति स्थायी नहीं होती।
2. अन्यायी व्यक्ति चाहता है कि कोई भी उसके अनुचित कार्यों का विरोध न करे। शान्ति बनाये रखने के नाम पर वह लोगों को विरोध से वंचित करता है।
3. कवि ने वर्तमान जीवन के ज्वलंत प्रश्न शान्ति या युद्ध को महाभारत के पात्र भीष्म और युधिष्ठिर के माध्यम से उठाया है।
4. भाषा सरल, सुसंस्कृत तथा प्रवाहपूर्ण है। अनुप्रास तथा रूपक अलंकार हैं। ओजपूर्ण है।

2. सच है, सत्ता सिमट-सिमट जिनके हाथों में आयी,
शान्तिभक्त वे साधु पुरुष क्यों चाहें कभी लड़ाई ?
सुख का सम्यक्-रूप विभाजन जहाँ नीति से, नय से।
संभव नहीं, अशान्ति दबी हो जहाँ खड्ग के भय से,
जहाँ पालते हों अनीति-पद्धति को सत्ताधारी,
जहाँ सूत्रधार हों समाज के अन्यायी अविचारी,
नीतियुक्त प्रस्ताव सन्धि के जहाँ न आदर पायें,
जहाँ सत्य कहने वालों के सीस उतारे जायें,

शब्दार्थ– सत्ता = शासन को अधिकार। साधु पुरुष = सज्जने (व्यंग्य का प्रयोग है)। सम्यक् = ठीक , सही। नये = न्याय। खड्ग = तलवार। पद्धति = ढंग, तरीका। सूत्रधार = संचालक। अविचारी= विचारहीन, मूर्ख। सन्धि = मेल। सीस = सिर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। दिनकर जी ने वर्तमान युग के ज्वलंत प्रश्न शान्ति या युद्ध को महाभारत के पात्र युधिष्ठिर तथा भीष्म के संवाद के रूप में उठाया है। उनका खण्डकाव्य कुरुक्षेत्र पौराणिक कथा पर आधारित है किन्तु उसे वर्तमान जीवन की समस्याओं पर विचार किया गया है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

व्याख्या– पितामह भीष्म ने शान्ति के पक्षपाती युधिष्ठिर से कहा कि अन्याय की भूमि पर खड़ी शान्ति अधिक समय तक नहीं रहती है। जिनको धीरे-धीरे शासन का अधिकार प्राप्त हो जाता है , वे शान्ति के पक्षधर बन जाते हैं। शान्ति रहने से ही उनका शासनाधिकार सुरक्षित रहता है। ऐसे भले आदमी युद्ध क्यों चाहेंगे ? सुख का सही स्वरूप सुख के साधनों का नैतिक नियमों तथा न्याय के आधार पर बँटवारे से ही प्रकट होता है। यदि नीति न्यायपूर्वक का सुख के साधनों अर्थात् धन-सम्पत्ति आदि का विभाजन नहीं होता और तलवार का भय दिखाकर बलपूर्वक अशान्ति को दबाया जाता है , वहाँ सच्ची और स्थायी शान्ति नहीं होती। शासक जब अनीति के रास्ते पर चलते हैं तथा समाज के संचालक अन्यायी तथा विचारहीन होते हैं , वहाँ शान्ति नहीं रहती। जहाँ मेलजोल की नीतियुक्त बातें स्वीकार नहीं होती और सच्ची बात बोलने वाले के सिर काट लिए जाते हैं, वहाँ समाज में शान्ति नहीं रहती।

विशेष –

1. शान्ति की स्थापना बलपूर्वक नहीं की जा सकती।
2. शान्ति के लिए नीति-न्याय से पूर्ण व्यवस्था का होना आवश्यक है।
3. भाषा विषयानुकूल तथा बोधगम्य है।
4. अनुप्रास, पुनरुक्ति आदि अलंकार हैं। वीर रस तथा ओजगुण है।

3. जहाँ खड्ग-बल एकमात्र आधार बने शासन का
दबे क्रोध से भभक रहा हो हृदय जहाँ जन-जन का,
सहते-सहते अनय जहाँ। मर रहा मनुज का मन हो,
समझ कापुरुष अपने को धिक्कार रहा जन-जन हो,
अहंकार के साथ घृणा का जहाँ द्वन्द्व हो जारी,
ऊपर शान्ति, तलातल में हो छिटक रही चिनगारी,
आगामी विस्फोट काल के मुख पर दमक रहा हो,
इंगित में अंगार विवश भावों के चमक रहा हो;

शब्दार्थ– खड्ग = तलवार। भभक रहा = उबल रहा। अनय = अन्याय। कापुरुष = कायर। द्वन्द्व = संघर्ष। तलातल = सात पातालों में सबसे नीचे का तल। चिनगारी = आग। विस्फोट = तेजी के साथ फूटना। इंगित = इशारा, संकेत। अंगार = आग से जलता कोयला आदि पदार्थ।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कुरुक्षेत्र ' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को समझाया कि सच्ची शांति क्या होती है तथा उसकी स्थापना में क्या बातें बाधक होती हैं। अन्याय की रक्षा के लिए तलवार की शक्ति से स्थापित शान्ति कभी स्थायी नहीं होती।

व्याख्या– पितामह भीष्म ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा कि जब शासक तलवार की शक्ति से लोगों का दमन करता है और न्याय नहीं केवल बल प्रयोग द्वारा शासन करता है तो ऐसी शान्ति ऊपरी तथा दिखावटी होती है। जहाँ लोगों का क्रोध भीतर-ही-भीतर धधकता रहता है और अवसर पाकर विद्रोह के रूप में फूट पड़ता है। जहाँ मनुष्य का मन अन्याय और शोषण सहते-सहते निराशा से भर उठता है और वह अपने को कायर समझने लगता है तथा स्वयं को धिक्कारने लगता है , जहाँ शासक अहंकारी, घमंडी होता है तथा शासित उससे

घृणा करता है, वहाँ दोनों में अन्दर-अन्दर ही संघर्ष चलता रहता है। वहाँ ऊपर से शान्ति दिखाई देती है तथा अन्दर विद्रोह की चिनगारी दबी रहती है और सुलगती रहती है। वहाँ भविष्य में विद्रोह और युद्ध की सम्भावना निरन्तर बनी रहती है। वहाँ भावनाओं के अंगारे लोगों को आचार-व्यवहार से सांकेतिक रूप में दिखाई दे जाते हैं।

विशेष –

1. शान्ति की स्थापना बल-प्रयोग और दमन से होना सम्भव नहीं है।
2. वीर रस तथा ओजपूर्ण है।
3. पुनरुक्ति तथा अनुप्रास अलंकार हैं। वर्णन में लाक्षणिकता है।
4. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा विषयानुरूप है।

4. पढ़कर भी संकेत सजग हों किन्तु ने सत्ताधारी,
दुर्मति और अनल में दे आहुतियाँ बारी-बारी,
कभी नये शोषण से, कभी उपेक्षा, कभी दमन से,
अपमानों से कभी-कभी शर-वेधक व्यंग्य-वचन से।
दबे हुए आवेग वहाँ यदि उबल किसी दिन फूटें,
संयम छोड़ काल बन मानव अन्यायी पर टूटें,
कहो कौन दायी होगा उस दारुण जगद्दहन का
अहंकार या घृणा ? कौन दोषी होगा उस रण का ?

शब्दार्थ– दुर्गति = दुर्बुद्धि, मूर्खता। अनल = आग। आहुति = हवन सामग्री। शर-बेधक = पैने। आवेग = भाव। संयम = आत्मनियंत्रण। काल = मृत्यु। दायी = उत्तरदायी। दारुण = भयानक। जगद्दहन = संसार का जलना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– उपर्युक्त पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को समझाया कि बल प्रयोग से स्थापित शान्ति स्थायी नहीं होती। जब लोगों का सब्र टूट जाता है तो वे अन्याय का विरोध करते हैं और विद्रोह कर देते हैं।

व्याख्या– पितामह ने कहा कि शासक को विरोध और विद्रोह का इशारा पाते ही सावधान हो जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा और वह मूर्खता का परिचय देते हुए आग में घी डालता रहेगा तो लोगों का विरोध बढ़ता ही जायेगा। शासक यदि अपने प्रजाजनों का शोषण करेगा अथवा उनकी बातों पर ध्यान नहीं देगा अथवा शक्ति का प्रयोग करके उनको दबायेगा तो अशान्ति अवश्य उत्पन्न होगी। लोग अपमानित होकर और पैनी व्यंग्यपूर्वक कही हुई बातें सुनकर भड़क उठेंगे। उनके मन में दबी हुई भावनाएँ किसी-न-किसी दिन उबल उठेगी और फूट पड़ेगी। वे अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रख सकेंगे तथा मृत्यु का रूप धारण करके अन्यायी शासक पर टूट पड़ेगे। इस तरह संसार में जो युद्ध की आग जलेगी, तुम बताओ, उसका उत्तरदायी कौन होगा ? शासक का घमण्ड तथा शासितजन की घृणा में से कौन इस युद्ध का दोषी होगा ?

विशेष –

1. कवि ने कहा है कि दमन से शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।
2. शोषित व्यक्ति का संयम जब जवाब दे जाता है, तो युद्ध भड़क ही उठता है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

3. भाषा बोधगम्य, साहित्यिक तथा प्रवाहपूर्ण है। ओजगुण है।
4. पुनरुक्ति, अनुप्रास तथा प्रश्न अलंकार हैं।

4. तुम विषण्ण हो समझ हुआ जगदाह तुम्हारे कर से।
सोचो तो, क्या अग्नि समर की बरसी थी अम्बर से ?
अथवा अकस्मात् मिट्टी से फूटी थी यह ज्वाला ?
या मंत्रों के बल से जनमी थी यह शिखा कराला ?
कुरुक्षेत्र के पूर्व नहीं क्या समर लगा था चलने ?
प्रतिहिंसा का दीप भयानक हृदय-हृदय में बलने?
शान्ति खोलकर खड्ग क्रान्ति का जब वर्जन करती है,
तभी जान लो, किसी समर का वह सर्जन करती है।

शब्दार्थ– विषण्ण = दु:खी। जगदाह = संसार का जलना, युद्ध। ज्वाला = आग। शिखा कराला = भयंकर लपटें। प्रतिहिंसा = बदला लेने की भावना। बलना = जलना। वर्जन = मनाही, रोकना। सर्जन करना = पैदा करना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक से संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता . रामधारी सिंह दिनकर हैं। युधिष्ठिर सोच रहे थे कि उनके कारण महाभारत युद्ध हुआ और हिंसा तथा रक्तपात हुआ। भीष्म पितामह ने उनको बताया कि ऐसा सोचना ठीक नहीं है। महाभारत युद्ध के दोषी युधिष्ठिर नहीं हैं, अन्याय का विरोध करने के लिए महाभारत युद्ध तो होना ही था।

व्याख्या– पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को बताया कि उनको स्वयं को महाभारत युद्ध का दोषी नहीं मानना चाहिए। उनको यह सोचकर दु:खी नहीं होना चाहिए। युद्ध में हिंसा उनके कारण हुई थी। उनको विचार करना चाहिए कि क्या यह युद्ध अकस्मात् और अकारण हुआ था। क्या युद्ध की आग आकाश से बरसी थी ? अथवा युद्ध की आग अचानक मिट्टी से फूट पड़ी थी ? क्या यह भयंकर अग्नि मंत्रों की शक्ति से प्रकट हुई थी ? पितामह ने आगे कहा कि कुरुक्षेत्र का युद्ध तो पहले से ही आरम्भ हो चुका था। कौरवों तथा पाण्डवों के बीच प्रतिहिंसा का दीपक पहले ही जलना आरम्भ हो गया था। अर्थात् उनके बदले की भावना पहले ही तैयार हो चुकी थी। जब शान्ति के पक्षधर ताकत के आधार पर क्रान्ति को रोकते हैं तो समझ लो कि वे उसी समय युद्ध का बीज बो देते हैं। आशय यह है कि शक्ति द्वारा शांति स्थापित करने तथा परिवर्तन को रोकने का परिणाम युद्ध के रूप में हमको झेलना पड़ता है।

विशेष –

1. युद्ध अचानक और अकारण कभी नहीं हुआ करता।
2. युद्ध के बीज शान्ति स्थापना के प्रयासों अथवा संधि-समझौतों के समय ही बो दिए जाते हैं।
3. भाषा सरस, सरल तथा विषयानुरूप है।
4. रूपक, संदेह, पुनरुक्ति, अनुप्रास, मानवीकरण आदि अलंकार हैं। ओजगुण है।
5. पितामह युधिष्ठिर को समझा रहे हैं कि युद्ध के दोषी वह नहीं हैं।

6. शान्ति नहीं तब तक, जब तक सुख-भाग न नर का सम हो,

नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो।
ऐसी शान्ति राज्य करती है। तन पर नहीं, हृदय पर,
नर के ऊँचे विश्वासों पर, श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।
न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है, जब तक न्याय न आता,
जैसा भी हो, महल शान्ति का सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम शान्ति सशंक आप अपने से ही डरती है,
खड्ग छोड़ विश्वास किसी का कभी नहीं करती है।

शब्दार्थ– सम = समान। प्रणय = प्रेम। श्रद्धा = आदरभाव। न्यास = धरोहर। सुदृढ़ = मजबूत। कृत्रिम = बनावटी। सशंक = शंकाग्रस्त।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि शक्ति का प्रयोग करके जो शान्ति स्थापित की जाती है , वह स्थायी नहीं होती है। सच्ची शान्ति न्यायपूर्ण व्यवहार पर निर्भर करती है।

व्याख्या – पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा कि जब तक संसार में सुख के साधनों अर्थात् धन-सम्पत्ति आदि पर समान अधिकार नहीं होता , तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। किसी को न तो बहुत अधिक तथा किसी को न बहुत कम प्राप्त होना चाहिए। सबको समान भाव से सुख-सम्पत्ति प्राप्त होनी चाहिए। सम्पत्ति के न्यायपूर्ण वितरण से ही वास्तविक शान्ति स्थापित होती है। सच्ची शान्ति मनुष्य के शरीर पर नहीं मन पर शासन करती है। वह मनुष्य के दृढ़ विश्वास , श्रद्धाभाव, भक्ति-भावना तथा प्रेम पर आधारित होती है। न्याय शान्ति की धरोहर होता है। न्याय के अभाव में सच्ची शान्ति नहीं होती। यदि समाज में लोग न्यायपूर्ण आचरण नहीं करते हैं। तो शान्ति का महल मजबूत नहीं बन पाता। अन्याय पर आधारित शान्ति शीघ्र नष्ट हो जाती है। बनावटी शान्ति को अपने आप से ही डर लगता है। अपने स्वयं से ही सशंकित रहती है। उसको केवल तलवार पर ही विश्वास होता है। वह और किसी पर विश्वास नहीं करती। आशय यह है कि कुछ लोग बल प्रयोग से स्थापित शान्ति को ही सच्ची शान्ति समझते हैं।

विशेष-

1. कवि ने सच्ची और बनावटी शांति का अन्तर बताया है।
2. सच्ची शान्ति मन से तथा बनावटी शान्ति तन से स्वीकृत होती है।
3. भाषा प्रवाहपूर्ण तथा सुबोध है।
4. अनुप्रास, मानवीकरण, सबद आदि अलंकार हैं, ओजगुण है।

7. और जिन्हें इसे शान्ति-व्यवस्था में सुख-भोग सुलभ है,
उनके लिए शान्ति ही जीवन सार, सिद्धि दुर्लभ है।
पर जिनकी अस्थियाँ चबाकर, शोणित पीकर तन का,

जीती है यह शान्ति, दाह समझो कुछ उनके मन का
स्वत्व माँगने से न मिले, संघात पाप हो जायें,
बोलो धर्मराज, शोषित वे जियें या कि मिट जायें ?
न्यायोचित अधिकार माँगने से न मिले तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को जीत, या कि खुद मर के।

शब्दार्थ– सुलभ = सरलता से प्राप्त। सार = तत्व। सिद्धि = सफलता। अस्थियाँ = हड्डियाँ। शोणित = रक्त , खून। दाह = जलन, पीड़ा। स्वत्व = अधिकार। संघात = आघात, प्रहार। शोषित = पीड़ित। तेजस्वी = तेजवान्, प्रतापी।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को बताया कि शोषण सहकर भी शान्त रहना उचित नहीं होता। माँगने पर भी अधिकार न मिले तो उसके लिए युद्ध करना अनुचित नहीं माना जाता है।

व्याख्या– पितामह भीष्म कहते हैं कि जिन लोगों को शान्तिपूर्ण व्यवस्था में सुख-सम्पत्ति सरलता से प्राप्त हो जाते हैं, वे तो शान्ति को जीवनदायिनी मानेंगे ही। उनके लिए शान्ति जीवन का तत्व तथा कठिन श्रम से प्राप्त सफलता है। वे इस शान्ति की प्रशंसा करेंगे ही। किन्तु इस शान्ति व्यवस्था में जिन लोगों का शोषण होता है, शक्तिशाली लोग जिनका खून पीते हैं और हड़ियाँ चबाते हैं , उनके मन की पीड़ा को भी तो समझो।। यदि अधिकार माँगने पर प्राप्त न हो, आघात करना पाप माना जाये, तो हे धर्मराज युधिष्ठिर ! तुम ही बताओ कि वे शोषित पीड़ित लोग जीवित रहें या मर जायें ? यदि न्याय की दृष्टि से उचित अधिकार माँगने पर न मिलें तो प्रतापी मनुष्य युद्ध में लड़कर, विजय प्राप्त करके, उनको पा लेते हैं अथवा लड़ते-लड़ते मर जाते हैं। अपने हक के लिए लड़ना पाप नहीं है।।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

विशेष –

1. पितामह की दृष्टि में कुछ अवस्थाओं में युद्ध करना उचित और आवश्यक होता है।
2. अधिकार खोकर चुप रहना कायरता कहलाता है।
3. भाव-साम्य- अधिकार खोकर बैठी रहना भी महा दुष्कर्म है। न्यायार्थ अपने बंधु को भी दण्ड देना धर्म है। -मैथिलीशरण गुप्त
4. भाषा बोधगम्य, प्रवाहपूर्ण तथा विषयानुरूप है।
5. अनुप्रास अलंकार, वीर रस तथा ओजगुण है।

8. किसने कहा, पाप है समुचित स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में अभय मारना-मरना ?
क्षमा, दया, तप, तेज मनोबल की दे वृथा दुहाई,
धर्मराज व्यंजित करते तुम मानव की कदराई।

हिंसा का आघात तपस्या ने कब कहाँ सहा है ?
देवों का दल सदा दानवों। से हारता रहा है।
मन:शक्ति प्यारी थी तुमको यदि पौरुष ज्वलन से,
लोभ किया क्यों भरत-राज्य का? फिर आये क्यों वन से?

शब्दार्थ– समुचित = पूर्णतः उचित। स्वत्व प्राप्ति हित = अधिकार पाने के लिए। अभय = निर्भय , निडर। मनोबल = मन की शक्ति। वृथा = व्यर्थ , बेकार। दुहाई देना = वास्ता देना। व्यंजित = प्रगट। कदराई = कायरता। आघात = प्रहार। मन:शक्ति = मन की शक्ति। पौरुष = पराक्रम। भरत-राज्य = भारत।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा कि अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए युद्ध करना उचित है , वीर पुरुष अपना हक युद्ध में जीतकर अथवा मर कर प्राप्त करते हैं।

व्याख्या– पितामह भीष्म ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा कि अपने न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति हेतु लड़ना अनुचित बात नहीं है। न्यायार्थ युद्ध में तलवार उठाना और निर्भयतापूर्वक मरना और मारना पाप नहीं है। धर्मराज युधिष्ठिर तुम क्षमा , दया, तपस्या, तेजस्विता, मनोबल आदि गुणों का वास्ता देकर युद्ध से विरत रहकर मनुष्य की कायरता को ही प्रकट कर रहे हो। तपस्या करने वाले ऋषि-मुनियों को भी हिंसक राक्षसों से सुरक्षा की आवश्यकता सदा रही है। दानवों की शक्ति के सामने देवताओं को हमेशा हार का सामना करना पड़ा है। यदि तुमको अपनी मन की शक्ति अर्थात् मन की शान्ति , पौरुष के प्रदर्शन की अपेक्षा अधिक प्रिय थी तो तुम वनवास छोड़कर हस्तिनापुर क्यों आये और कौरवों से अपना राज्य वापस क्यों माँगा?
विशेष –

1. युद्ध में क्षमा, दया, तप, तेज आदि की बातें करना कायरता का प्रदर्शन है।
2. पाण्डवों ने श्रीकृष्ण को अपना दूत बनाकर दुर्योधन के पास भेजा था और अपना राज्य वापस माँगा था।
3. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा वर्णन के अनुरूप है।
4. अनुप्रास तथा प्रश्न अलंकार है। ओजगुण है।

9. पिया भीम ने विष, लाक्षागृह जला, हुए वनवासी,
केशकर्षिता प्रिया सभा-सम्मुख कहलायी दासी। क्षमा,
दया, तप, त्याग, मनोबल, सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु-समक्ष तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर समझा उतना ही।
अत्याचार सहन करने का कुफल यही होता है,

पौरुष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है।

शब्दार्थ– लाक्षागृह = लाख से बना मकान। केशकर्षिता = जिसके केश पकड़कर खींचे गए अर्थात् द्रोपदी। नर व्याघ्र = मनुष्य रूप में बाघ। सुयोधन = दुर्योधन। रिपु = शत्रु। विनत = विनम्र। आतंक = भय।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को वनवास की अवधि पूरी करके लौटने और दुर्योधन से अपना राज्य वापस माँगने की घटना का स्मरण कराया और कहा कि महाभारत युद्ध इस न्यायोचित माँग के अमान्य होने के कारण हुआ था।

व्याख्या– पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को स्मरण कराया कि भीम को जहर दिया गया तथा पाण्डवों को लाक्षागृह आग में जलाने का प्रयास भी हुआ था। उनको बारह वर्ष वन में रहना पड़ा था। राजसभा में द्रोपदी के केश खींचकर उसे अपमानित किया गया था और दासी बनाया गया था। उस समय तुमने क्षमा, दया, तप तथा त्याग और मनोबल आदि मानवीय गुणों की बातें कहकर दुर्योधन को अन्यायपूर्ण आचार करने से रोकने का पूरा प्रयास किया था। किन्तु सत्ता की शक्ति से मदमत्त नररूप सिंह दुर्योधन इससे अप्रभावित ही रहा था। उस पर तुम्हारे इन नीतियुक्त वचनों का ही प्रभाव नहीं हुआ था।

तुमने शत्रु को क्षमा करने का जितना अधिक प्रयास किया और उसके सामने अपनी विनम्रता प्रकट की, दुष्ट कौरवों ने इसका अर्थ यही समझा कि तुम कायर हो। तुम्हारी नम्रता को उन्होंने कायरता समझा। दमन सहने करने का यही दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। वह जितनी अधिक कोमलता और उदारता प्रकट करता है , विरोधी पक्ष उसके पराक्रम से उतना ही कम भयभीत होता है। उसको उसके पराक्रम और वीरता भयभीत नहीं करते।

विशेष –

1. अपने पौरुष से शत्रु को आतंकित करनी न्याय तथा शान्ति की सुरक्षा के लिए आवश्यक होता है।
2. भाषा प्रवाहपूर्ण तथा बोधगम्य है।
3. ओजगुण तथा वीर रस है। अनुप्रास अलंकार है।
4. भीम को विष देना, लाक्षागृह में पाण्डवों को जलाने का प्रयास करना तथा भरी सभा में द्रोपदी का अपमान करना आदि कौरवों की अनीति की ओर संकेत है। इनको युधिष्ठिर की शान्तिवादी नीति का परिणाम बताया गया है। कवि का संकेत है कि भारत की उदारता और शान्ति की नीति उसके लिए हितकर नहीं रही है। वह अनेक समस्याओं का कारण बनी है।

10. क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दन्तहीन, विषरहित, विनीत सरल हो ?
तीन दिवस तक पन्थ माँगते रघुपति सिन्धु-किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द। अनुनय के प्यारे-प्यारे।
उत्तर में जब एक नाद भी उठा नहीं सागर से,

उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि' करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की, बँधा मूढ़ बन्धन मे।

शब्दार्थ– शोभती= शोभा देती है। भुजंग = सर्प। गरल = विष, जहर। पन्थ = मार्ग, लंका जाने के लिए रास्ता। रघुपति = राम। अनुनय = विनय , निवेदन। अनुनय के छंद पढ़ना = प्रार्थना करना। नाद = स्वर , आवाज। अधीर = धैर्यहीनता से पूर्ण। धधक = सुलगना। देहधर = शरीर ग्रहण कर , साकार। त्राहि त्राहि = रक्षा के लिए पुकारना, बचाओ बचाओ। मूढ़ = मूर्ख।।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को समझाया कि अत्याचार सहन करने का परिणाम भयानक होता है। शक्ति का प्रयोग किया जाय अथवा नहीं किन्तु शक्ति को प्रदर्शित करना जरूरी होता है। शत्रु को अपने पराक्रम से भयभीत बनाए रखना जरूरी है।

व्याख्या– पितामह भीष्म युधिष्ठिर से बोले-जिस सर्प के पास विष होता है, क्षमा उसी को शोभा देती है। जिसके दाँत टूट गये हों जिसमें जहर नहीं हो, जो विनम्र तथा सीधा-सादा हो उससे कोई नहीं डरता। आशय यह है कि क्षमा करने का अधिकार शक्तिशाली तथा पराक्रमी वीर पुरुष को ही होता है। दुर्बल मनुष्य को क्षमा करने की बात कहना शोभा नहीं देता। पितामह ने भगवान राम का उदाहरण देकर पराक्रम की महत्ता समझाई। उन्होंने कहा – राम समुद्र के तट पर तीन दिन तक उससे लंका तक जाने का मार्ग देने के लिए नम्रतापूर्वक निवेदन करते रहे, किन्तु समुद्र ने उनकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। यह देखकर राम का पराक्रम जाग उठा। उन्होंने नम्र निवेदन छोड़कर अपने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। यह देखकर समुद्र भयभीत हो उठा। वह साकार होकर 'हे प्रभु ! रक्षा करो, रक्षा करो' कहता हुआ उनके चरणों पर गिर पड़ा। उसने राम की चरण वन्दना की , उनका दास बना और वह मूर्ख उनके वशीभूत हो गया।

विशेष –

1. शक्ति के अभाव में विनम्रता और क्षमा शोभा नहीं देते। वे कायरता का अवगुण बन जाते हैं।
2. भाव-साम्य – विष भवतु मा भवतु, फणाटोपो भयंकरः"- अर्थात् सर्प में विष हो अथवा न हो, उसका फन फैलाना ही शत्रु को भयभीत कर देता है। शक्ति का प्रदर्शन करने वाले को उसके प्रयोग की आवश्यकता नहीं रहती।
3. भाषा तत्सम शब्दावली युक्त है वह भावानुकूल तथा बोधगम्य है।
4. अनुप्रास, पुनरुक्ति, रूपक अलंकार, वीर रस तथा ओजगुण है।

11. सच पूछो, तो शर में ही। बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि-वचन संपूज्य उसी का जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है।
गरल-पँट पी जाने का मिस है, वाणी का छल है।

शब्दार्थ– शर = बाण, तीर। दीप्ति = चमक। संधि वचन = समझौते की बातें , मेल-जोल की नीति। संपूज्य = माननीय। दर्प = गर्व। सामर्थ्य = क्षमता। शोध = दण्डित करना। मिस = बहाना। छल = कपट।

सन्दर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'कुरुक्षेत्र' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को समझाया कि मनुष्य को शक्ति की उपासना करनी चाहिए। शक्तिहीन व्यक्ति से संसार में कोई नहीं डरता। यदि शक्तिहीन पुरुष क्षमा की बात करे तो यह उसको छलपूर्ण आचरण ही कहलायेगा।

व्याख्या– पितामह ने युधिष्ठिर को बताया कि विनम्रता शक्तिशाली पुरुषों को ही शोभा देती है। विनम्रता की चमक-दमक बाण अर्थात् अस्त्र-शस्त्र से ही प्रकट होती है। शस्त्रहीन, शक्तिहीन पुरुष की विनम्रता निरर्थक होती है। जिस वीर पुरुष में शत्रु को परास्त करने की शक्ति होती है , उसी की मेलजोल की नीति तथा सन्धि-समझौते की बातें स्वीकार्य होती हैं। सन्धि की शर्तें तय करने का अधिकारी शक्तिशाली मनुष्य ही होता है। जब मनुष्य को वीरता और पराक्रम लोगों को स्पष्ट दिखाई देते हैं , तभी संसार उसका आदर करता है तथा उसके सहनशीलता, क्षमा, दया आदि गुण माननीय होते हैं। जिस पुरुष में अपने शत्रु को परास्त करने की शक्ति नहीं होती है, उसको क्षमा की बात कहने का हक नहीं होता। उसके द्वारा अपने शत्रु को क्षमा करने की बात कहना व्यर्थ है। उसका यह प्रयास बहाने से जहर पीने के समान है। क्षमा की बात करना उसकी बातों के कपटपूर्ण होने का प्रमाण है।

विशेष –

1. क्षमा का अधिकार शक्ति-सम्पन्न मनुष्य को ही होता है।
2. दुर्बल व्यक्ति यदि किसी को क्षमा करने की बातें कहता है, तो इसको उसका कपटपूर्ण आचरण ही माना जाता है।
3. भाषा बोधगम्य, विषयानुरूप तथा प्रवाहपूर्ण है।
4. अनुप्रास अलंकार, ओजगुण तथा वीर रस है।

THE HINDI PAGE
जानें कुछ नया
www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg